|b09291 45oaksdF (English)

|c09291_000_45oaksd.xml (Task 178322)

|v1

रविवार का प्रातःकालीन सत्र

|v2

जनरल सम्मेलन

|v3

रविवार का प्रातःकालीन सत्र

|v4

3 अक्टूबर 2010

|v5

वार्तालाप के दो तरीके

|v6

प्रकटीकरण

|v7

प्रार्थना

|v8

पौरोहित्य

|v9

पवित्र आत्मा

|v10

गिरजाघर संगठन

|v11

वार्तालाप के दो तरीके

|v12

एल्डर डैलिन एच. ओक्स द्वारा

|v13

बारह प्रेरितों की परिषद के

|v14

हमें दोनों, व्यक्तिगत तरीके और पौरोहित्य के तरीके का उन्नति को प्राप्त करने के लिए उचित संतुलन में उपयोग करना चाहिए जो कि नश्वर जीवन क ा उद्देश्य है ।

|v15

हमारे स्वर्गीय पिता ने अपने बच्चों को उसके साथ वार्तालाप करने के दो तरीके दिए हैं--- जिसको हम व्यक्तिगत तरीका और पौरोहित्य का तरीका कह सकते हैं । सभी को वार्तालाप के इन दोनों आवश्यक तरीकों को समझना और उससे मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए ।

|v16

I. व्यक्तिगत तरीका

|v17

व्यक्तिगत तरीके में हम अपने स्वर्गीय पिता से सीधा प्रार्थना करते हैं और बिना किसी नश्वर मनुष्य के हस्तक्षेप के वह उन माध्यमों के द्वारा हमें उत्तर देता है जिसे उसने स्थापित किया है । हम अपने स्वर्गीय पिता से यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करते हैं, और वह हमें पवित्र आत्मा के द्वारा और अन्य तरीके से उत्तर देता है । पवित्र आत्मा का उद्देश्य पिता और पुत्र की गवाही देना है (देखें यूहन्ना 15:26; 2 नफी 31:18; 3
नफी 28:11), हमें सच्चाई का मार्ग दिखाना है (देखें यूहन्ना 14:26;
16:13), और हम पर उन सभी बातों को प्रकट करना है जिसे हमें करना चाहिए (देखें 2
नफी 32:5) । पवित्र आत्मा के द्वारा अपने स्वर्गीय पिता से बातचीत का यह व्यक्तिगत तरीका, हमारी सच्चाई की गवाही, हमारे ज्ञान, और स्नेही स्वर्गीय पिता से हमारे व्यक्तिगत मार्गदर्शन का आधार है । यह उसके अदभुत सुसमाचार योजना का एक आवश्यक लक्षण है, जो उसके प्रत्येक बच्चे को इसकी सच्चाई की एक व्यक्तिगत गवाही प्राप्त करने की अनुमति देता है ।

|v18

पवित्र आत्मा के द्वारा अपने स्वर्गीय पिता से बातचीत का सीधा व्यक्तिगत माध्यम योग्यता पर आधारित होता है, और इतना जरूरी है कि हमें हर सब्त के दिन प्रभुभोज को ग्रहण करके अपने अनुबन्धों का नवीनीकरण करने की आज्ञा दी गई है । इस प्रकार से हम उस प्रतिज्ञा के योग्य ठहरते हैं, जिस में पवित्र आत्मा हमारे मार्गदर्शन के लिए हमारे साथ सदा रह सकता है ।

|v19

प्रभु के साथ बातचीत के इस व्यक्तिगत तरीके से संबंधित, हमारी धारणा और प्रथा उन ईसाइयों के समान ही है जो इस बात पर बल देते हैं कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच मानवीय मध्यस्थताएं अनावश्यक हैं क्योंकि मार्टिन लूथर के द्वारा संदर्भ किये गए सिद्धान्त ''सभी विश्वासियों का पौरोहित्य'' के तहत हर कोई सीधे तौर पर परमेश्वर से बातचीत कर सकता है । इसके विषय में मैं बाद में और बोलूँगा ।

|v20

व्यक्तिगत निर्णयों और परिवारों पर संचालन में व्यक्तिगत तरीका बहुत ही महत्वपूर्ण है । दुर्भाग्यपूर्ण, गिरजाघर के कुछ सदस्य इस सीधे, व्यक्तिगत तरीके की आवश्यकता को कम आँकते हैं । दिव्य नेतृत्व के निसंदेह महत्व के जवाब में---पौरोहित्य का तरीका, जिसका उपयोग मुख्य रूप से गिरजाघर के मामलों में स्वर्गीय वार्तालाप के संचालन के लिए किया जाता है---कुछ लोग अपने व्यक्तिगत निर्णयों को करने पौरोहित्य मार्गदर्शकों की सहायता लेते हैं , वे निर्णय जिसे अपने व्यक्तिगत तरीके की प्रेरणा द्वारा उन्हें स्वयं लेने चाहिए । व्यक्तिगत निर्णय और परिवार पर संचालन विशेष रूप से व्यक्तिगत तरीके का विषय है ।

|v21

मैं दो चेतावनियों को जोड़ना चाहता हूं जिसे हमें अपने स्वर्गीय पिता के साथ वार्तालाप के इस मूल्यवान सीधे व्यक्तिगत तरीके के संबंध में याद रखना चाहिए ।

|v22

पहली, इसकी परिपूर्णता में, व्यक्तिगत तरीका पौरोहित्य के तरीके के समान स्वतन्त्र होकर काम नहीं करता है । पवित्र आत्मा का उपहार---परमेश्वर द्वारा मनुष्य से बातचीत करने का माध्यम---उन पौरोहित्य अधिकारियों द्वारा प्रदान किया जाता है जो पौरोहित्य कुंजियों के धारक होते हैं । इसे केवल इच्छा या विश्वास से प्राप्त नहीं किया जा सकता है । और निरन्तर रूप से इस आत्मा के साथ के अधिकार को हर सब्त पर पुष्टि करने की आवश्यकता होती है जब हम योग्यता से प्रभुभोज को ग्रहण करते और आज्ञाकारिता और सेवा के अपने बपतिस्मा के अनुबन्धों का नवीनीकरण करते हैं ।

|v23

इसी के समान, हम सीधे व्यक्तिगत तरीके पर निर्भर होते हुए वार्तालाप नहीं कर सकते हैं, यदि हम पौरोहित्य के तरीके के प्रति अवज्ञाकारी या उसके सामंजस्य में नहीं हैं । प्रभु ने घोषित किया है कि "स्वर्ग की शक्तियों को केवल धार्मिकता के सिद्धान्तों का उपयोग करने के द्वारा ही नियंत्रित किया जा सकता है या उन्हें संभाला जा सकता है" (देखें सि. और अनु. 121:36) । दुर्भाग्यपूर्ण, यह उन व्यक्तियों के लिए सामान्य है जो परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं या अपने पौरोहित्य मार्गदर्शकों की सलाह को नहीं मानते हैं यह घोषित करने के लिए कि परमेश्वर ने उनपर प्रकट किया है कि वे कुछ आज्ञाओं के पालन से या कुछ सलाह के अनुसरण से बच सकते हैं । इस प्रकार के व्यक्ति प्रकटीकरण या प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु यह उस माध्यम से नहीं है जिससे उन्हें प्राप्त करना चाहिए । शैतान झूठ का जन्मदाता है, और अपने धूर्त अनुकरण से वह सदा ही परमेश्वर के कार्य में विघ्न डालने की इच्छा रखता है ।

|v24

II. पौरोहित्य का तरीका

|v25

व्यक्तिगत तरीके से भिन्न, जिसमें हमारा स्वर्गीय पिता पवित्र आत्मा के द्वारा हमसे सीधे तौर पर बातचीत करता है, वार्तालाप के पौरोहित्य के तरीके में हमारा उद्धारकर्ता, यीशु मसीह; उसका गिरजाघर; और उसके नियुक्त मार्गदर्शकों की अतिरिक्त और आवश्यक मध्यस्थताएं हैं।

|v26

अपने प्रायश्चित भरे बलिदान के द्वारा उसने जो प्राप्त किया है उसके कारण, यीशु मसीह के पास उन परिस्थितियों के दिशा निर्देश की शक्ति है जिससे उसके प्रायश्चित की आशीषों को पाने के योग्य होने के लिए हमें पूरा करना होगा । इसीलिए हमारे पास आज्ञाएं और धर्मविधियां हैं । इसीलिए हम अनुबन्ध बनाते हैं । इसी प्रकार हम प्रतिज्ञा की गई आशीषों के योग्य ठहरते हैं । ''जो कुछ हम कर सकते हैं उसे कर लेने के पश्चात'' (2 नफी 25:23), ये सभी आशीषें इस्राएल के पवित्र द्वारा की गई दया और अनुग्रह से आती हैं ।

|v27

अपनी पार्थिव सेवकाई के दौरान, यीशु मसीह ने पौरोहित्य के अधिकार को प्रदान किया था जिसमें उसका नाम है और उसने एक गिरजाघर स्थापित किया जिसमें भी उसका नाम है । इस अन्तिम युग में, उसका पौरोहित्य अधिकार पुनःस्थापित हुआ और उसका गिरजाघर स्वर्ग के संदेशवाहकों की सेवकाई से भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ द्वारा पुनःस्थापित किया गया था । यह स्थापित पौरोहित्य और पुनःस्थापित गिरजाघर पौरोहित्य के तरीके का अति आवश्यक भाग हैं ।

|v28

पौरोहित्य का तरीका वह माध्यम है जिससे बीते हुए समय में परमेश्वर ने अपने बच्चों से धर्मशास्त्रों के द्वारा बात की है । और यह वह तरीका है जिससे वह वर्तमान में जीवित भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों और अन्य प्रेरित मार्गदर्शकों की शिक्षाओं और सलाह के द्वारा बात करता है । यही वह तरीका है जिससे हम आवश्यक धर्मविधियों को प्राप्त करते हैं । यही वह तरीका है जिससे उसके गिरजाघर में सेवा के प्रति बुलाहट प्राप्त करते हैं । उसका गिरजाघर वह मार्ग है और उसका पौरोहित्य वह शक्ति है जिसके द्वारा हम उन संगठित गतिविधियों में भाग लेने के सुअवसर को प्राप्त करते हैं जो कि प्रभु के कार्य को पूरा करने के लिए आवश्यक हैं । इन गतिविधियों में शामिल है सुसमाचार का प्रचार करना, मन्दिरों और प्रार्थनालयों का निर्माण करना, और गरीबों की मदद करना ।

|v29

इस पौरोहित्य के तरीके के संबंध में, हमारी धारणा और प्रथा कुछ उन ईसाइयों के आग्रह के समान है जिसमें आधिकारिक धर्मविधियां आवश्यक हैं और उन्हें किसी एक प्राधिकृत व्यक्ति द्वारा ही किया जाना चाहिए और यीशु मसीह द्वारा ठहराया जाना चाहिए (देखें यूहन्ना 15:16) । हम भी उसी में विश्वास करते हैं, परन्तु हम जिस प्रकार से उस अधिकार को प्राप्त करने का दावा करते हैं, उसपर अन्य ईसाइयों से हमारी धारणाएं निश्चय रूप से भिन्न हैं ।

|v30

गिरजाघर के कुछ सदस्य या पूर्व सदस्य पौरोहित्य के तरीके के महत्व को पहचानने में असफल हो जाते हैं । वे गिरजाघर और उसके मार्गदर्शकों और उसके कार्यक्रमों के महत्व को कम आँकते हैं । पूरी तरह से व्यक्तिगत तरीके पर आधारित, भविष्यवक्ता-मार्गदर्शकों की शिक्षाओं के विपरित जाकर सिद्धान्त की परिभाषा के तात्पर्य को समझाते हुए, और मुकाबला कर रहे गिरजाघरों का नेतृत्व करते हुए, वे अपने स्वयं के मार्ग पर चलते हैं । जब वे ऐसा करते हैं, वे प्रतिकूल आचरण का प्रदर्शन करते हैं, इसमें वे आधुनिक प्रतिरोध की नकल करते हैं जो अलोचनात्मकरूप से ''संगठित धर्म'' कहलाता है । वे जो संगठित धर्म की आवश्यकता को अस्वीकार करते हैं स्वामी के कार्य को अस्वीकारते हैं, जिसने प्राचीन समय में अपने गिरजाघर को और उसके अधिकारियों को स्थापित किया और जिन्होंने आधुनिक समय में उसे पुनःस्थापित किया ।

|v31

जैसा कि प्रेरित पौलुस ने सीखाया था: ईश्वरीय अधिकार द्वारा स्थापित, संगठित धर्म आवश्यक है,

|v32

''जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाएः

|v33

‘‘जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं’’ (इफिसियों 4:12--13)।

|v34

आधुनिक प्रकटीकरण में प्रभु की घोषणा को हमें याद रखना चाहिए कि प्रभु के सेवकों की आवाज प्रभु की आवाज है (देखें सि. और अनु. 1:38; 21:5; 68:4)।

|v35

मैं दो चेतावनियों को जोड़ना चाहता हूं जिसे हमें अत्यावश्यक पौरोहित्य के तरीके पर विश्वास के संबंध में याद रखना चाहिए।

|v36

पहली, पौरोहित्य का तरीका व्यक्तिगत तरीके की आवश्यकता को अलग नहीं करता है। हम सभी को सच्चाई की व्यक्तिगत गवाही की आवश्यकता है। जैसे-जैसे हमारा विश्वास बढ़ता है, हम अनिवार्य रूप से शब्दों और दूसरों के विश्वास पर निर्भर होते हैं जैसे हमारे माता-पिता, शिक्षक, और मार्गदर्शकों के विश्वास पर (देखें सि. और अनु. 46:14)। परन्तु व्यक्तिगत तरीके से गवाही को प्राप्त करने के स्थान पर यदि हम पूरी तरह से सच्चाई की अपनी व्यक्तिगत गवाही के लिए किसी विशिष्ट पौरोहित्य मार्गदर्शक या शिक्षक पर निर्भर होते हैं, तब हम उस व्यक्ति की क्रियाओं द्वारा सदा के लिए गलत धारणा को लेकर असुरक्षित रहते हैं। एक परिपक्व ज्ञान या सच्चाई की गवाही को प्राप्त करने में, हमें अपने और स्वर्गीय पिता के बीच के नश्वर मध्यस्थता पर आधारित नहीं होना चाहिए।

|v37

दूसरी, व्यक्तिगत तरीके के समान, पौरोहित्य का तरीका तब तक हमारे लाभ के लिए पूरी तरह से और उचित तरीके से काम नहीं कर सकता है जब तक हम योग्य और आज्ञाकारी न हों। कई धर्मशास्त्र सीखाते हैं कि यदि हम परमेश्वर की आज्ञाओं का गंभीरता से उल्लंघन करने में डटे रहते हैं तब हमें ‘‘उसकी उपस्थिति से अलग कर दिया जाता है’’ (अलमा 38:1)। जब ऐसा होता है, प्रभु और उसके सेवक हमें आत्मिक मदद देने में बहुत ही सीमित हो जाते हैं और हम उसे अपने स्वयं के लिए प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

|v38

इतिहास हमें प्रभु के सेवकों की आत्मा के सामंजस्य में होने के महत्व का जीवन्त उदाहरण प्रदान करता है। युवा भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ अनुवाद नहीं कर सकते थे जब वह क्रोधित या निराश होते थे।

|v39

डेविड विटमर याद करते हैंः “एक सुबह जब वह अनुवाद के कार्य को जारी रखने की तैयारी कर रहे थे, घर में कोई समस्या उत्पन्न हो गई और वह उसके कारण निराश हो गए। समस्या कुछ ऐसी थी कि उनकी पत्नी, एमा, ने कुछ किया था। ओलिवर और मैं ऊपर गए, और शीघ्र ही इसके पश्चात जोसफ अनुवाद का कार्य जारी रखने आये, परन्तु वे कुछ भी न कर सके। वह एक अक्षर का भी अनुवाद नहीं कर सके। वह नीचे, बगीचे में गए और प्रभु से प्रार्थना की; लगभग एक घंटा बीतने के बाद---घर में वापस आये, एमा से क्षमा मांगी और फिर ऊपर आये जहां हम थे और अनुवाद सही तरीके से हुआ। वह कुछ नहीं कर सके जब तक वह विनम्र और विश्वासी न हुए।’’1

|v40

III. दोनों तरीकों की आवश्यकता

|v41

मैं उन दोनों तरीकों की आवश्यकता के साथ समाप्त करूँगा जिसे स्वर्गीय पिता ने अपने बच्चों के साथ वार्तालाप के लिए स्थापित किया है । दोनों तरीकों, उसके बच्चों के प्रति उसके उद्देश्य अमरत्व और अनन्त जीवन को प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं । प्राचीन धर्मशास्त्र के विवरण में ये आवश्यकता मूसा के ससुर यित्रो की सलाह में है कि मूसा को अत्याधिक काम करने का प्रयास नहीं करना चाहिए । ''परमेश्वर से पूछने'' (निर्गमन 18:15) और ''उनके बीच न्याय करने के लिए भी'' (आयत 16) लोग सुबह से रात तक अपने पौरोहित्य मार्गदर्शक पर निर्भर होते थे । गिरजाघर में हम अक्सर ध्यान देते हैं कि किस प्रकार यित्रो मूसा को व्यक्तिगत विवादों को निपटाने के प्रति न्यायाधीशों को नियुक्त करने की सलाह देता है (आयत 21--22) । परन्तु यित्रो ने मूसा को वह सलाह भी दी थी जो व्यक्तिगत तरीके के महत्व को दर्शाती हैः

''इन्हें विधि और व्यवस्था प्रगट कर करके, जिस मार्ग पर इन्हें चलना, और जो जो काम इन्हें करना हो, वह इनको जता दिया कर'' (आयत 20; महत्व जोड़ा गया है) ।

|v42

दूसरे शब्दों में, मूसा का अनुसरण करनेवाले इस्राएलियों को सीखाया गया था कि वे हर प्रश्न को उस पौरोहित्य मार्गदर्शक के पास न ले जाएं । उन्हें आज्ञाओं को समझना चाहिए और स्वयं ही अधिकतर समस्याओं का समाधान प्रेरणा द्वारा करना चाहिए ।

|v43

चिली के राष्ट्र की हाल ही की घटनाएं दोनों तरीकों की आवश्यकता को दर्शाती हैं । चिली में एक विनाशी भूकंप आया था । हमारे कई सदस्य बेघर हो गए; कुछ ने परिवार के सदस्यों को खो दिया । कई लोगों ने आत्मविश्वास खो दिया । शीघ्रता से---क्योंकि हमारा गिरजाघर इस प्रकार की विपत्तियों के लिए तैयार था---खाद्य पदार्थ, आश्रय, और अन्य सहायक सामग्रियों को उपलब्ध कराया गया । चिली के सन्तों ने प्रभु की आवाज को उसके गिरजाघर के द्वारा सुना और उसके मार्गदर्शकों ने उनकी भौतिक जरूरतों को पूरा किया । परन्तु पौरोहित्य का तरीका चाहे कितना भी कारगर क्यों न हो, यह पर्याप्त नहीं था । हर सदस्य को प्रार्थना में प्रभु से बात करने की और सांत्वना और मार्गदर्शन के उस सीधे संदेश को प्राप्त करने की आवश्यकता थी जो उन लोगों के पास पवित्र आत्मा द्वारा आती है जो उसे ढूंढते और सुनते हैं ।

|v44

हमारा प्रचार कार्य दोनों तरीकों की आवश्यकता का अन्य उदाहरण है । पुरुष और स्त्री जिन्हें प्रचार कार्य के लिए बुलाया जाता है वे पौरोहित्य के तरीके द्वारा प्राप्त शिक्षाओं और व्यक्तिगत तरीके द्वारा प्राप्त गवाही के कारण योग्य और इच्छुक होते हैं । उन्हें पौरोहित्य के तरीके द्वारा नियुक्त किया जाता है । तब, प्रभु के प्रतिनिधि के रूप में और उसके पौरोहित्य के तरीके के निर्देशानुसार, वे खोजकर्ताओं को सीखाते हैं । सच्चाई को गंभीरतापूर्वक खोजनेवाले सुनते हैं, और प्रचारक उन्हें प्रोत्साहित करते हैं कि वे व्यक्तिगत तरीके से स्वयं के लिए संदेश की सच्चाई को जानने के प्रति प्रार्थना करें ।

|v45

आखिरी उदाहरण परिवार और गिरजाघर में पौरोहित्य अधिकार के विषय को दर्शाता है कि कैसे लागू करना है ।2 गिरजाघर के सभी पौरोहित्य अधिकार का उपयोग उस व्यक्ति के निर्देशानुसार होता है जो उपयुक्त पौरोहित्य कुंजियों का धारक होता है । यह पौरोहित्य का तरीका है । परन्तु अधिकारी जो परिवार पर अध्यक्षता करता है---चाहे वह पिता हो या अकेले रह रही मां---किसी पौरेहित्य कुंजियों के धारक से बिना अनुमोदन की आवश्यकता के पारिवारिक मामलों में कार्य कर सकता/सकती है । वह व्यक्तिगत तरीके के समान है । दोनों तरीकों से हमारे पारिवारिक और व्यक्तिगत जीवन में कार्य होना चाहिए यदि हमें आगे बढ़ना हो और अपने स्वर्गीय पिता की योजना के तहत उसके बच्चों को अनन्त जीवन प्राप्त करना हो ।

|v46

हमें दोनों, व्यक्तिगत तरीके और पौरोहित्य के तरीके का उन्नति को प्राप्त करने के लिए उचित संतुलन में उपयोग करना चाहिए जो कि नश्वर जीवन का उद्देश्य है । यदि व्यक्तिगत धार्मिक अभ्यास पूरी तरह से व्यक्तिगत तरीके पर आधारित हो, विशिष्ट व्यक्ति पर ध्यान ईश्वरीय अधिकार के महत्व को मिटा देता है । यदि व्यक्तिगत धार्मिक अभ्यास ज्यादातर पौरोहित्य के तरीके पर आधारित हो, व्यक्तिगत विकास रुक जाता है । परमेश्वर के बच्चों को

उनकी अनन्त नियति को प्राप्त करने के लिए दोनों तरीकों की आवश्यकता है । पुनःस्थापित सुसमाचार दोनों तरीकों को सीखाता है, और पुनःस्थापित गिरजाघर दोनों तरीकों को उपलब्ध कराता है ।

|v47

मैं प्रभु के भविष्यवक्ता, अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन की गवाही देता हूं, जिनके पास वे कुंजियां हैं जिससे पौरोहित्य के तरीके का संचालन होता है । मैं प्रभु यीशु मसीह की गवाही देता हूं, जिसका यह गिरजाघर है । और मैं पुनःस्थापित सुसमाचार की गवाही देता हूं, जिसकी सच्चाई हममें से हर कोई अपने स्वर्गीय पिता से प्राप्त मूल्यवान व्यक्तिगत तरीके के द्वारा जान सकता है । यीशु मसीह के नाम में, आमीन ।

|v48

विवरण

|v49

1.

|v50

1. ‘‘एल्डर डब्ल्यु. एच. केली के पत्र,’’ में *The Saints’ Herald*, मार्च 1, 1882, 68 । इसी के समान विवरण को बी. एच. रॉबर्ट के, *A Comprehensive History of the Church*, 1:131 में उद्धरित किया गया है ।

|v51

2.

|v52

देखें डैलिन एच. ओक्स, “Priesthood Authority in the Family and the Church,” लियाहोना, नवंबर 2005, 24--27 ।

|v53

लियाहोना

|v54

नवंबर 2010